International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-02-2025, Accepted: 02-03-2025, Published: 18-03-2025
Volume 11, Issue 1, 2025, Page No. 80-82

हिन्दी के प्रारंभिक समाचार पत्र

मो. आरिफ़ अंसारी
रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग, मौलाना आज़ाद विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
हिन्दी पत्रकारिता की शुरुआत 30 मई 1826 को युगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित 'उदंत मार्तंड' से हुई, जो हिन्दी भाषियों के लिए पहला समाचार पत्र था। हालांकि, आर्थिक कठिनाइयों के कारण यह 1827 में बंद हो गया। इसके बाद 'बंगदूत' (राजा राममोहन राय के सहयोग से) और 'मजहरुल सरूर' (1852, भरतपुर) प्रकाशित हुए। 'बनारस अख़बार' (1845) और 'मालवा अख़बार' (1848) ने क्षेत्रीय समाचारों को आगे बढ़ाया। 1850 में 'सुधाकर' हिन्दी और बंगला में छपा, लेकिन बाद में हिन्दी का प्रमुख समाचार पत्र बन गया। 1852 में 'बुद्धि प्रकाश' और 1854 में पहला हिन्दी दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' प्रकाशित हुआ। 1857 में 'पयामे आज़ादी' ने स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी विचारों को फैलाया। इन पत्रों ने हिन्दी पत्रकारिता को मजबूत आधार दिया और समाज सुधार, भाषा विकास तथा राजनीतिक चेतना को बढ़ावा दिया, जिससे आगे की पत्रकारिता का मार्ग प्रशस्त हुआ।
हिन्दी पत्रकारिता का आरंभ 19वीं सदी के पहले भाग में हुआ, जब भारतीय समाज में जागरूकता और सामाजिक सुधार की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। इस समय का भारतीय समाज अंग्रेजी उपनिवेशवाद के प्रभाव में था और भारतीयों के लिए अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए एक मंच की आवश्यकता थी। हिन्दी पत्रकारिता का पहला कदम इस दिशा में बढ़ा जब पं. जुगल किशोर शुक्ल ने 1826 में 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन किया, जो हिन्दी में पहला समाचार पत्र था। इस पत्र का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज को जागरूक करना, शिक्षा और सुधार की दिशा में कदम बढ़ाना था। हालांकि शुरुआती दौर में पत्रकारिता बहुत सीमित स्तर पर थी, लेकिन यह धीरे–धीरे भारतीय समाज के विचार और चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगी।
इस आरंभिक काल में हिन्दी पत्रकारिता का उद्देश्य समाज में सुधार लाना और स्वतंत्रता संग्राम के लिए जनमत तैयार करना था। सामाजिक जागरूकता, धार्मिक सुधार और ब्रिटिश शासन के खिलाफ आक्रोश फैलाने के लिए पत्रिकाएं और समाचार पत्र महत्वपूर्ण माध्यम बने।

मूल शब्दः हिन्दी पत्रकारिता, उदंत मार्तंड, समाचार पत्र, जागरूकता, समाज सुधार

उदंत मार्तंडः 30 मई 1826 को कलकत्ता से प्रकाशित 'उदंत मार्तंड' को हिन्दी पत्रकारिता का पहला पत्र माना जाता है। इसे युगल किशोर शुक्ल ने कोलू टोला मोहल्ले से आरंभ किया। पंडित अम्बिका प्रसाद वाजपेयी कहते हैं कि "अब तक की खोज में जाना गया है कि पहला हिन्दी समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' है। यह पत्र प्रति मंगलवार को कलकत्ते से प्रकाशित होता था।"[1] 'उदंत मार्तंड' का उद्देश्य हिन्दी भाषी जनता के लिए एक ऐसा मंच तैयार करना था, जहां वे समाचार और जानकारी अपनी भाषा में पढ़ सकें। इस पत्र के विभिन्न अंकों में इसके उद्देश्य और स्वरूप का परिचय मिलता है
'उदंत मार्तंड' से पहले हिन्दी में कोई समाचारपत्र नहीं था। इसके प्रथम अंक में यह स्पष्ट किया गया था कि यह पत्र हिन्दी भाषी लोगों के लिए शुरू किया गया, ताकि वे अंग्रेजी, बंगाली और फारसी पत्रों पर निर्भर न रहें और अपनी भाषा में समाचार पढ़ने का आनंद ले सकें। हालांकि यह पत्र केवल डेढ़ वर्ष तक ही प्रकाशित हुआ, लेकिन अपने समय में यह भाषा और विचारों की दृष्टि से एक प्रभावशाली प्रयास था। 'उदंत मार्तंड' की भाषा बहुस्तरीय और विविधतापूर्ण थी। इसमें हिन्दी के साथ–साथ ब्रज, अवधी, बंगला, उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का मिश्रण पाया जाता था। इसके समाचार और स्तंभों में व्यापक विविधता थी, जो इसे समकालीन समस्याओं पर प्रभावी ढंग से प्रकाश डालने में सक्षम बनाते थे। यह पत्र अपने निर्भीक लेखन के लिए जाना जाता था। इसने सामाजिक कुरीतियों, अनाचार और अन्याय पर खुलकर प्रहार किया। हालांकि, इसकी कोई सरकारी सहायता नहीं थी और ग्राहकों की आर्थिक स्थिति भी खराब थी। परिणामस्वरूप, युगल किशोर शुक्ल को इसे बंद करना पड़ा। अंतिम अंक में उन्होंने लिखाः

''आज दिवस लौ उग चुक्यौ मार्तंड उदंत।
अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अंत।।''[2]

'उदंत मार्तंड' हिन्दी पत्रकारिता का पहला कदम था, जिसने सीमित संसाधनों और कठिनाइयों के बावजूद, हिन्दी भाषा और समाज के लिए एक महत्वपूर्ण विरासत छोड़ी।

बंगदूतः 'बंगदूत' नामक पत्र अंग्रेजी, बंगला और फारसी भाषाओं में प्रकाशित होता था। लेकिन, कलकत्ता में हिन्दी भाषा–भाषियों की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए, इस पत्र में हिन्दी भाषा का भी समावेश किया गया। हिन्दी खंड के आरंभ में एक विशेष छंद प्रकाशित होता थाः

''दूतनि की यह रीति बहुत चोरें में भाषै।
लोगनि को बहुलाभ होय याही ते लाखें।।
बंगाला को दूत दूत यहि वायु को जानौ।
होय विदित सब क्लेश को लेश न मानौ।।''[3]

डॉ रमेश कुमार जैन इस पत्र का उल्लेख करते हुए लिखते हैं "राजा राम मोहन राय ने अपने अंग्रेजी पत्र 'हिन्दू हेराल्ड' को अपने विचारों के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए 10 मई 1829 को हिन्दी में 'बंगदूत' निकाला। इसके प्रथम संपादक नील रतन हालदार थे। यह पत्र फ़ारसी और बंगला में भी निकलता था।"4 'बंगदूत' का उद्देश्य सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर लोगों को जागरूक करना था। पत्र के एक अंक में इसका परिचय इन शब्दों में दिया गया ''बंगदूत नाम का कागज एशिया संज्ञा पृथ्वी के इस प्रसिद्ध खंड में जो कुछ बीते और होय लिपि की रीति से लिखें। इसलिए इस संबंध में प्रयोजन के उपयोगी समाचार जो कोई भेजेंगे वह बड़ा उपकार मान करके लिया जाएगा।

'बंगदूत' राजा राममोहन राय के प्रयासों का परिणाम था और यह पत्र सूचना के प्रसार के साथ–साथ सामाजिक सुधार की दिशा में भी कार्यरत था। हिन्दी भाषा के माध्यम से इसने कलकत्ता और आसपास के क्षेत्रों में लोगों तक घटनाओं और समाचारों को पहुंचाने का कार्य किया। इस पत्र ने अपने समय में बहुभाषीय संवाद और सामाजिक जागरूकता को प्रोत्साहित किया। हिन्दी खंड की सामग्री ने इस पत्र को हिन्दी भाषी जनता के बीच लोकप्रिय बनाया और यह हिन्दी पत्रकारिता के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में जाना गया।

बनारस अखबारः जनवरी 1845 में उत्तर प्रदेश के वाराणसी से बनारस अखबार का प्रकाशन हुआ। इसके संपादन का कार्य गोविंद नारायण यत्ते ने संभाला, जबकि इसके संचालक राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद थे। यह समाचार पत्र देवनागरी लिपि में प्रकाशित होता था। 'बहुत से लोग इसे ही हिन्दी का प्रथम अख़बार मानते हैं, परन्तु यह हिन्दीभाषी प्रदेश का प्रथम समाचार–पत्र अवश्य था न कि हिन्दी का पहला अख़बार। इसमें देवनागरी लिपि का प्रयोग होता था।'[5] डॉ माहेश्वरी सिंह इस पत्र का उल्लेख करते हुए लिखते हैं "1845 ई. में 'बनारस अखबार' का प्रकाशन हुआ। हिन्दी प्रदेश से निकलने वाला यह हिन्दी पत्र माना जायेगा।"6 इस अखबार की भाषा में फारसी और अरबी शब्दों का प्रचुरता से उपयोग होता था, जिससे इसे साधारण जनता के लिए समझना कठिन हो जाता था। इसमें संस्कृत साहित्य के अनुवाद, स्थानीय समाचार और अन्य समाचार पत्रों से ली गई सामग्री का समावेश होता था। इस समाचार पत्र की भाषा में हिन्दी से अधिक उर्दू का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था।

बनारस अखबार के बाद, हिन्दी पत्रकारिता ने आगे बढ़ते हुए अन्य समाचार पत्रों का उदय देखा। 11 जून, 1846 को कलकत्ता से इंडियन सन (मार्तंड) और 6 मार्च, 1848 को इंदौर से 'मालवा अखबार' का प्रकाशन हुआ। 'मालवा अखबार' को न केवल मध्य भारत बल्कि पश्चिमी मध्य प्रदेश से प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र होने का गौरव प्राप्त है। इन समाचार पत्रों ने हिन्दी पत्रकारिता के विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और क्षेत्रीय समाचारों और सांस्कृतिक चेतना को बढ़ावा दिया।

सुधाकरः 'सन् 1850 ई. में 'सुधाकर' नामक हिन्दी पत्र छपा। यह बंगला तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में छापता था। 1853 ई. में यह केवल हिन्दी में छपने लगा। इस पत्र में हमें भाषा का शुद्ध रूप देखने को मिलता है।"[7] इसके प्रकाशक तारा मोहन मैत्रेय थे। यह पत्र अपने समय में द्विभाषीय संवाद का एक महत्वपूर्ण माध्यम था। हालांकि, सन् 1853 से इसे केवल हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया जाने लगा। इसे उत्तर प्रदेश का पहला पूर्ण हिन्दी समाचार पत्र माना जा सकता है। इस पत्र की सबसे बड़ी विशेषता इसकी भाषा की शुद्धता थी। सुधाकर ने हिन्दी लेखन में एक नई दिशा प्रदान की और पाठकों को सरल एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति से परिचित कराया। यह पत्र हिन्दी पत्रकारिता के शुरुआती दौर में भाषा और शैली के विकास का एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मजहरुल सरूरः सन् 1852 में भरतपुर के राजा ने शासन की ओर से एक मासिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया, जिसे 'मजहरुल सरूर' कहा गया। यह पत्र द्विभाषी था, जिसमें सामग्री उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं में प्रस्तुत की जाती थी। पत्र की भाषा उर्दू थी, लेकिन लिपि देवनागरी का उपयोग किया गया, जिससे यह दोनों भाषाओं के पाठकों के लिए सहज और उपयोगी बन गया। लक्ष्मीकांत उपाध्याय लिखते हैं "भरतपुर के राजा ने शासन की ओर से 1852 में एक मासिक पत्र निकाला, यह पत्र उर्दू व हिन्दी का था अर्थात यह द्विभाषी पत्र। इसकी ज़बान तो उर्दू थी तो लिपि देवनागरी थी। यह दो कॉलम का पत्र था। दोनों ही भाषाएँ एक कॉलम में होती थीं। इसे राजस्थान का प्रथम पत्र होने का गौरव प्राप्त है।"[8]

'मजहरुल सरूर' अपने समय में क्षेत्रीय संवाद और जागरूकता का महत्वपूर्ण माध्यम बना। 'इसी दौरान ग्वालियर से ''ग्वालियर गजट'' और आगरा से ''प्रजाहितैषी'' आदि पत्र प्रकाशित हुए।' जिन्होंने स्थानीय समाचारों और सामाजिक मुद्दों को लोगों तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। ''मजहरुल सरूर'' ने न केवल पत्रकारिता के क्षेत्र में नवाचार किया, बल्कि राजस्थान में पत्रकारिता की नींव रखने का श्रेय भी अर्जित किया।

बुद्धि प्रकाशः 'बुद्धि प्रकाश', जो 1852 में आगरा से प्रकाशित हुआ, भाषा शैली और पत्रकारिता के दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण पत्र था। इसके संपादक लाला सदासुखलाल थे। इस पत्र ने न केवल समाचार प्रसारित करने में अपनी भूमिका निभाई बल्कि हिन्दी भाषा के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। डॉ महेश्वर सिंह इस पत्र का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि "1852 ई. में आगरे में 'बुद्धि प्रकाश' निकला। इसके संपादक सदासुखलाल थे।"[9] बुद्धि प्रकाश को उसकी भाषा–संवर्धन की दिशा में की गई पहलों के लिए विशेष रूप से याद किया जाता है। इस पत्र ने भाषा के शुद्ध और प्रभावी रूप को स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे हिन्दी लेखन को एक नई दिशा मिली। ऐसे प्रयासों ने हिन्दी पत्रकारिता में भाषा और शैली की सुदृढ़ नींव रखने में मदद की।

समाचार सुधावर्षणः सन् 1854 में समाचार सुधावर्षण नामक पत्र का प्रकाशन 'यामसुंदर दास के संपादन में हुआ। यह पत्र अपने समय में राष्ट्रीय भावना को प्रकट करने वाला एक सशक्त माध्यम था। हालांकि, पत्र ने तत्कालीन सामाजिक समस्याओं के प्रति एक निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया और इन विषयों पर गहनता से विचार करने से परहेज किया। इस पत्र के विषय में डॉ महेश्वर सिंह लिखते हैं "1854 ई. में 'यामसुंदर दास नामक एक बंगाली सज्जन ने 'समाचार सुधावर्षण' नामक हिन्दी और बंगला दैनिक कलकत्ते से प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। यह हिन्दी और बंगला दो भाषाओं में प्रकाशित होता था और इसका संपादन बंगला भाषी सज्जन करते थे। यह कभी छः पृष्ठ का तो कभी आठ पृष्ठ का रहता था। इसमें अधिकांश हिन्दी रहती थी। हिन्दी का अंश पहले रहता था। संपादकीय टिप्पणियां, लेख तथा सम्पूर्ण समाचार हिन्दी में ही रहते थे।"[10] इस पत्र की भाषा में बंगाली प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता था, लेकिन इसके बावजूद इसकी अभिव्यक्ति में शुद्धता और सटीकता बनी रही। समाचार सुधावर्षण ने पत्रकारिता के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रस्तुत की और अपने विचारशील दृष्टिकोण के कारण समाज में विशेष पहचान बनाई।

पयामे आज़ादीः पयामे आज़ादी को हिन्दी पत्रकारिता का पहला स्वतंत्रता सेनानी पत्र माना जा सकता है। इसमें हर शब्द क्रांति की आग से भरा हुआ था, और यह अंग्रेजों के लिए एक खतरनाक हथियार बन गया था। इसके प्रति जो कोई भी जाता था, उसे ब्रिटिश शासन द्वारा कड़ी सजा दी जाती थी। इस पत्र के बारे में डॉ अवधेश कुमार लिखते हैं "1857 में भारतीयों ने एक होकर ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया। बहादुरशाह जफर, तात्या टोपे, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, मंगल पाण्डे आदि अनेक नेताओं ने इस सशस्त्र क्रांति का संचालन एवं नेतृत्व किया। 1857 के युद्ध के एक अन्य नेता जो (बहादुरशाह ज़फर के परिवार के सदस्य थे) केदार बख्त ने दिल्ली से 1857 में 'पयामे आज़ादी' नामक पत्र का 8 फरवरी को प्रकाशन किया। इस पत्र के संपादक प्रथम स्वाधीनता के अन्य नेता श्री अजीमुल्ला खां थे। इस पत्र ने स्वाधीनता संर्वष में भाग

लेने के लिए जन समुदाय को प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रथम शहीद राजमंगल पांडे की अंग्रेज़ों द्वारा हत्या किये जाने के पश्चात् एक क्रान्तिकारी संपादकीय छापा जो इस प्रकार था–'11

''बरेली और मुरादाबाद की सैनिक पलटनों के सेनापतियों का दिल्ली की सेना की ओर हार्दिक आलिंगन। भाईयो। दिल्ली में फिरंगियों के साथ आजादी की जंग हो रही है। खुदा की दुआ से हमने उन्हें पहली शिकस्त दी है, उससे वे इतना बबरा गए हैं जितना कि पहले ऐसी दस शिकस्तों से भी न घबराते। बेशुमार हिन्दुस्तानी बहादुरी के साथ दिल्ली जमा हो रहे है। ऐसे मौके पर आपका आना लाजिमी है। आप अगर वहाँ खाना खा रहे हों तो हाथ यहाँ आकर धोइये। हमारा बादशाह आपका इस्तकबाल करेगा। हमारे कान इस तरह आपकी ओर लगे हैं जिस तरह रोजेदारों के कान मुआज्जिन की ओर लगे रहते हैं। हम आपकी आवाज सुनने के लिए बेताब हैं। हमारी आँखे आपके दीदार की प्यासी है। बिना आपकी आगद के गुलाब के पौधे में फूल नहीं खिल सकते।''[12] 'इस संपादकीय के अतिरिक्त इसी पत्र में 1857 की क्रांति का राष्ट्रीय गीत भी छपा था जिसने जनसमुदाय में स्वाधीनता की भावना का संचार किया, यह गीत इस प्रकार था–

"हम हैं इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा
ये है हमारी मिलिकियत हिंदुस्तान हमारा
इसकी सहामियत से, रोशन है जग सारा,
कितना है जरखेज जिसे, गंगोजमन की धारा।
ऊपर बर्फीला पर्वत, पहरेदार हमारा,
नीचे साहिल पर बजता, सागर का नक्कारा,
इसकी खाने उगल रही, सोना, हीरा, पारा,
इनकी शानो शौकत का दुनिया में जपनारा।
आया फिरंगी दूर से ऐसा मंतर मारा,
लूटा दोनों हाथों से प्यारा वतन हमारा
आज शहीदों ने तुमको अहले वतन ललकारा
तोड़ों गुलामी की जंजीरें, बरसाओं अंगारा।
हिंदु, मुसलमां, सिख हमारा भाई भाई प्यारा,
ये है आजादी का झंडा, इसे सलाम हमारा।''[13]

'पत्र के संपादक केदार बख्त खां को ब्रिटिश हुकूमत द्वारा फांसी की सजा दी गई थी। यह पत्र राजे–रजवाड़ों से अपील करता था कि वे इस स्वतंत्रता संग्राम में एकजुट होकर भाग लें। "अंग्रेज़ों ने कुछ देशद्रोही भारतीयों के साथ मिलकर इस स्वाधीनता संग्राम का दमन कर दिया तथा अनेक क्रांतिकारियों को नृशंस हत्याएं कीं। अग्रेज शासकों का आक्रोश पत्रकारिता पर भी टूटा तथा 'पयामे आज़ादी' की सभी प्रतियाँ जब्त करके नष्ट कर दी गई। ऐसा भी कहा जाता है कि जिन घरों में इस पत्र को प्रतियाँ पाई गई उनके स्वामियों की भी हत्या कर दी गई।"[14] हालांकि यह आंदोलन सफल नहीं हो पाया, और पत्र को बंद कर दिया गया, फिर भी पयामे आज़ादी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जड़ें मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई।

निष्कर्ष

हिन्दी पत्रकारिता का प्रारंभिक दौर संघर्षमय रहा, लेकिन इन समाचार पत्रों ने समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया। 'उदंत मार्तंड' हिन्दी का पहला समाचार पत्र था, जबकि 'बंगदूत', 'मजहरुल सरूर' और 'बनारस अख़बार' ने इसे आगे बढ़ाया। 1854 में 'समाचार सुधावर्षण' पहला हिन्दी दैनिक बना, जबकि 'पयामे आज़ादी' (1857) स्वतंत्रता संग्राम की आवाज बना। इन पत्रों ने हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बनाया और समाज में जागरूकता फैलाई। आर्थिक कठिनाइयों और सरकारी सहयोग की कमी के बावजूद, इन समाचार पत्रों ने पत्रकारिता को मजबूत किया और भविष्य की हिन्दी पत्रकारिता की नींव रखी।

सन्दर्भ

1. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता, डॉ अवधेश कुमार, पृष्ठ 88–89
2. पत्रकारिता का इतिहास, लक्ष्मीकांत उपाध्याय, पृष्ठ 70
3. पत्रकारिता का इतिहास, लक्ष्मीकांत उपाध्याय, पृष्ठ 72
4. हिन्दी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ रमेश कुमार जैन, पृष्ठ 44
5. पत्रकारिता का इतिहास, लक्ष्मीकांत उपाध्याय, पृष्ठ 71
6. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, संपादक डॉ सम्पूर्णानन्द, भाग–13, पृष्ठ 97
7. पत्रकारिता का इतिहास, लक्ष्मीकांत उपाध्याय, पृष्ठ 73
8. पत्रकारिता का इतिहास, लक्ष्मीकांत उपाध्याय, पृष्ठ 72
9. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, संपादक डॉ सम्पूर्णानन्द, भाग–13, पृष्ठ 98
10. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, संपादक डॉ सम्पूर्णानन्द, भाग–13, पृष्ठ 98
11. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता, डॉ अवधेश कुमार, पृष्ठ 99
12. प्रथम भारतीय जनक्रांति के युद्ध, उदय नारायण सिंह, पृष्ठ 17
13. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, संपादक डॉ सम्पूर्णानन्द, भाग–13, पृष्ठ 99
14. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता, डॉ अवधेश कुमार, पृष्ठ 100